शेमुषी

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

www.dreamtopper.in

0961

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0961 – शेमुषी (प्रथमो भागः)
नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

ISBN 81-7450-470-2

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2007, दिसंबर 2007,
जनवरी 2009, जनवरी 2010,
जनवरी 2012, मार्च 2013,
नवंबर 2013, दिसंबर 2014,
दिसंबर 2015, जनवरी 2017,
दिसंबर 2017, मार्च 2019,
जनवरी 2020, मार्च 2021 और
नवंबर 2021

संशोधित संस्करण
अक्तूबर 2022 कार्तिक 1944

PD 50T RPS

© *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006, 2022*

₹ 55.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा यंग प्रिंटिंग प्रेस, एस–119, साइट–II, हर्षा कम्पाउंड, मोहन नगर इंडस्ट्रियल एरिया, गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *विपिन दिवान*
मुख्य संपादक (प्रभारी)	: *बिज्ञान सुतार*
सहायक संपादक	: *ओम प्रकाश*
सहायक उत्पादन अधिकारी	: *दीपक जैसवाल*

चित्रांकन
सुजीत सिंह

आवरण
आलोक हरि

www.dreamtopper.in

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु सम्भाषणस्य, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां,

www.dreamtopper.in

संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी. पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्ष्ये संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

जनवरी 2006   निदेशकः

नवदेहली   राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

www.dreamtopper.in

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड–19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020* में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है –

- स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों की पाठ्यपुस्तकों एवं पूरक पाठ्यपुस्तकों में समान विधाओं का समायोजन;
- भाषायी दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति संबंधी विषय वस्तु की उपस्थिति;
- कोविड महामारी से पैदा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम–बोझ और परीक्षा तनाव को कम करना;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

www.dreamtopper.in

www.dreamtopper.in

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

राधावल्लभ त्रिपाठी, *पूर्व अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

उमाशंकर शर्मा, (सेवानिवृत्त) *संस्कृत विभागाध्यक्ष*, पटना विश्वविद्यालय, पटना

आदर्श अहूजा, *टी.जी.टी.*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, दिल्ली

आभा झा, *टी.जी.टी.*, श्री वीरचन्दसिंह गढ़वाली रा.व.मा.बा.विद्यालय, जे ब्लॉक, साकेत, नयी दिल्ली

निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी.*, केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैम्पस, नयी दिल्ली

भारतेन्दु मिश्र, *टी.जी.टी.*, एल–187, दिलशाद गार्डन, नयी दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *प्रोफ़ेसर* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

रमेशकुमार पाण्डेय, *अध्यक्ष*, शोध एवं प्रकाशन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली

राजेन्द्र मिश्र, *पूर्वकुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

शशी तिवारी, *रीडर*, संस्कृत विभाग, मैत्रेयी कालेज, नयी दिल्ली

सदस्य एवं समन्वयक

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

www.dreamtopper.in

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय–विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् जानकीवल्लभ शास्त्री, वाई. महालिङ्ग शास्त्री तथा पद्मशास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य सामग्री संकलित की गई है।

पुस्तक की योजना–निर्माण से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक समिति के समन्वयक कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष,* उनके सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक की पुनरीक्षण समिति (2018) के संयोजक तथा माननीय सदस्यों पी.एन. शास्त्री, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान दिल्ली; रमेश कुमार पाण्डेय, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति*, ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ दिल्ली; रमेश भारद्वाज, *प्रोफ़ेसर,* संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय; ए.एस वेंकेटेशन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, के.वि. चेन्नै; जी.एस. वासन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, चेन्नै तथा चन्द्रशेखर शर्मा, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, ग्वालियर का अनेकविध मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है। एतदर्थ परिषद् सभी विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुनरीक्षण कार्य को संपन्न कराने में विशेष सहयोग के लिए जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; रिंकेश भदूला, *(जे.पी.एफ.),* भाषा शिक्षा विभाग तथा अनीता एवं रेखा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर्स,* भाषा शिक्षा विभाग; नेहा पाल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* भाषा संपादन के लिए ममता गौड़, *संपादक (संविदा), प्रकाशन प्रभाग* साधुवाद के पात्र हैं।

परिषद्, इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों एवं विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए पाठ्यचर्या समूह द्वारा गठित की गई समीक्षा समिति में भाषा विभाग के संकाय सदस्यों तथा सी.बी.एस.ई. के प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त करती है।

❖ ❖ ❖

www.dreamtopper.in

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। श्रद्धावश लोग इसे देववाणी तथा सुरभारती भी कहते थे। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है। राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसमें रचित साहित्य का सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, पृथ्वी-प्रेम, परोपकार, त्याग तथा सत्कर्म आदि भावनाओं के प्रसारण में अमूल्य योगदान है। संस्कृत का समकालीन साहित्य आधुनिक समस्याओं तथा मानव के संघर्षों को भी आत्मसात् करता है, जिससे विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर नहीं माना जा सकता है।

प्राचीनकाल में, संस्कृत की रचनाएँ हजारों वर्षों तक मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहीं तो आज की संस्कृत-कृतियों का वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी प्रगति के साथ समन्वय उन्हें अद्यतन बनाता है। यह गौरव का विषय है कि न्यूनतम चार हजार वर्षों की संस्कृत-साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्राय: प्रामाणिक रूप से होता रहा है, जहाँ भारतीय संस्कृति की समन्वय-प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

संस्कृत को मात्र प्राचीनता के लिए ही पढ़ना पर्याप्त नहीं है, अपितु अपने देश के बहुभाषिक परिदृश्य में संस्कृत की महत्ता राष्ट्र की एकता के लिए सर्वोपरि है। आधुनिक भारतीय भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण, शब्द-सम्पत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। अन्य भाषाओं के समान आधुनिक संस्कृत भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multi-lingualism) का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य के दो रूप प्राप्त होते हैं-वैदिक तथा लौकिक। **वैदिक साहित्य** के अन्तर्गत **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक** तथा **उपनिषद्** ग्रन्थ आते हैं। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद**-इन चारों वेदों को **संहिता** कहते हैं। इन संहिताओं में जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्ड परक व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को **'ब्राह्मण'** कहा जाता है। आरण्यकों की रचना वनों में हुई। इनमें वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या है। उपनिषदों

www.dreamtopper.in

में वैदिक ज्ञान का प्रौढ़तम रूप प्राप्त होता है। इसलिए इनके सिद्धांतों को **'वेदान्त'** भी कहते हैं। वैदिक साहित्य को सही सन्दर्भ में समझने के लिए वेदाङ्गों की रचना हुई, वेदाङ्ग छह हैं–**शिक्षा** (उच्चारण–विज्ञान), **व्याकरण** (पद–विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मंत्रों की छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ–विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)। कहा गया है–

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

लौकिक संस्कृत साहित्य का आरम्भ आदिकवि वाल्मीकि के **रामायणम्** से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम के जीवन चरित का वर्णन है। इसे आदि काव्य भी कहा जाता है। प्रथम संस्कृत काव्य होने के अतिरिक्त रामायण परवर्ती संस्कृत कवियों के लिए प्रेरक तथा उपजीव्य ग्रन्थ है। इसमें सात काण्ड तथा 24000 श्लोक हैं। काण्डों का विभाजन सर्गों में हुआ है।

रामायण के अतिरिक्त महर्षि वेदव्यास–रचित एक लाख श्लोकों का **महाभारत** भी कवियों तथा साहित्यकारों के लिए कथानक–ग्रहण करने का आधार–ग्रन्थ रहा है। इसमें कौरवों तथा पाण्डवों की कथा है। दोनों के बीच ऐसे युद्ध का वर्णन है जहाँ अन्याय पर न्याय की विजय दिखाई गई है **(यतो धर्मस्ततो जयः)**। इसमें 18 **पर्व** हैं जिनके नाम मुख्य विषय–वस्तु के आधार पर दिये गये हैं। महाभारत में भारतीय जीवन–पद्धति के सभी पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। कहा गया है कि जो इसमें वर्णित है, वही सर्वत्र साहित्य में पल्लवित है किन्तु जो इसमें प्रतिपादित नहीं वह अन्यत्र कहीं नहीं है–**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।** इसके अतिरिक्त एक सामान्य लोकोक्ति भी प्रचलित है–**यन्न भारते तन्न भारते** (अर्थात् जो महाभारत में नहीं, वह भारत में नहीं)। **भगवद्गीता** महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है जिसमें युद्ध से विरत अर्जुन को श्रीकृष्ण ने कर्मपथ के उपदेश दिये हैं।

रामायण तथा **महाभारत** के समान पुराणों का भी महत्त्व है। इनका विपुल साहित्य 18 पुराणों में विद्यमान है। इनमें प्राचीन भारत के जन–जन के लिए सभी ज्ञातव्य विषयों का संग्रह है। आरम्भ में इनमें पाँच मुख्य विषयों का प्रतिपादन करने का लक्ष्य था–**सर्ग** (जगत् की सृष्टि), **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रलय), **वंश** (देवों तथा ऋषियों की वंशावली), **मन्वन्तर** (विभिन्न युगों की घटनाओं का वर्णन) तथा **वंशानुचरित** (प्रसिद्ध राजाओं की वंश–परंपरा)। इसी पृष्ठभूमि में पुराणों के पाँच लक्षण कहे गये हैं–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

आगे चलकर पुराणों ने समस्त सांस्कृतिक पक्षों को आत्मसात् कर लिया। इसी कारण इनमें भारतीय समाज का प्रतिबिम्बन प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा के महत्त्व, पर्वतों–वनों–नदियों के प्रति श्रद्धा–प्रदर्शन तथा सदाचार–वर्णन के कारण पुराणों ने भारत की सांस्कृतिक एकता तथा नैतिक आचरण के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

इनके अनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के प्रस्फुटन एवं विकास का काल है। एक ओर नाटकों के अनेक रूपों का इतिहास है तो दूसरी ओर संस्कृत महाकाव्यों, लघुकाव्यों, गद्यकाव्यों तथा चम्पू (गद्य–पद्ययुक्त) काव्यों की दीर्घ परम्परा है जो आज तक अनवरत चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ की हैं जैसे संस्कृत के सबसे बड़े कवि कालिदास ने महाकाव्यों (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्), गीतिकाव्यों (मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्) तथा नाटकों (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा विक्रमोर्वशीयम्) की रचना की।

अन्य प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के लेखक), शूद्रक (मृच्छकटिकम्), विशाखदत्त (मुद्राराक्षसम्), हर्ष (3 नाटक), भवभूति (उत्तररामचरितम् जैसे 3 नाटक), भट्टनारायण (वेणीसंहारम्) इत्यादि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन आदि के द्वारा अपने युग के जन–जीवन के विकृत पक्ष पर व्यङ्ग्यपूर्ण दृष्टि डाली है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष (बुद्धचरितम् और सौन्दरनन्दम्), भारवि (किरातार्जुनीयम्), भट्टि (रावणवधम्), माघ (शिशुपालवधम्), क्षेमेन्द्र (पाँच महाकाव्यों के अतिरिक्त अनेक व्यंग्यकाव्यों के लेखक कश्मीरी कवि), श्री हर्ष (नैषधीयचरितम्) इत्यादि हैं। बिल्हण (विक्रमाङ्कदेवचरितम्), कल्हण (राजतरङ्गिणी) आदि ने ऐतिहासिक काव्य लिखे हैं।

गीतिकाव्यों या लघुकाव्यों के प्राचीन लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृङ्गार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतकम्), जयदेव (गीतगोविन्दम्), जगन्नाथ (भामिनीविलासः) इत्यादि प्रसिद्ध हैं। गद्यकवियों में सुबन्धु (वासवदत्ता), बाणभट्ट (हर्षचरितम् तथा कादम्बरी), दण्डी (दशकुमार–चरितम्), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराजविजयम्) इत्यादि विख्यात हैं।

संस्कृत साहित्य की समीक्षा के विषय में भरतमुनि (नाट्यशास्त्रम्), भामह (काव्यालङ्कार), दण्डी (काव्यादर्श), वामन (काव्यालङ्कारसूत्र), आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक), मम्मट (काव्यप्रकाशः), विश्वनाथ (साहित्यदर्पण), जगन्नाथ (रसगङ्गाधरः) प्रभृति लेखकों की लम्बी परम्परा उपलब्ध है। इसी प्रकार व्याकरण, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि शास्त्रों की स्वतन्त्र एवं दीर्घ परम्परा चली है जिसमें सहस्राधिक ग्रन्थ संस्कृत के गौरव की वृद्धि करते हैं।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए

www.dreamtopper.in

वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं-

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
2. शिक्षा की आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुति।
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना।
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को चिन्तन के लिए प्रेरित करना।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए **शेमुषी** (प्रथमो भागः) नामक पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम एवं वर्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसी दृष्टि से इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ ही साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित रचनाओं को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरंभ में पाठ-संदर्भ दिये गये हैं, जिनसे छात्र पाठ-प्रसंग को सरलता से समझ सकेंगे। छात्रों को सीखने के अधिकाधिक अवसर देने के लिए पाठों के अन्त में विविध-प्रश्नों वाली अभ्यासचारिका दी गयी है।

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आये सभी नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में अर्थ दिये गये हैं। योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गयी है, जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज ही उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए यथेष्ट रूप से शिक्षण-संकेत भी दिये गये हैं ताकि निर्धारित पाठ्यबिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापन किया जा सके। पाठों को दृश्य-विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्रों का समावेश करके पुस्तक को आकर्षक बनाया गया है।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गये हैं जिनमें छह पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा छह पाठ आधुनिक रचनाओं से हैं। आधुनिक पाठों में भी चार पाठ संस्कृत की मौलिक रचनाओं तथा दो पाठ दूसरी भाषाओं से अनुवाद के रूप में हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में तीन प्रकार की पाठ-सामग्री है-

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से - लौहतुला, सूक्तिमौक्तिकम्, जटायोः शौर्यम् तथा वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्।

(ख) आधुनिक मौलिक रचनाओं से - गोदोहनम्, भारतीवसन्तगीतिः, भ्रान्तो बालः तथा सिकतासेतुः।

(ग) संस्कृत में अनूदित/निर्मित रचनाओं से–स्वर्णकाकः तथा पर्यावरणम्।

पाठ–सामग्री को यथासंभव मूलरूप में ही रखा गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए यत्र–तत्र सम्पादित कर उन्हें सरल बनाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत वाङ्मय के जिन ग्रन्थों से सामग्री ली गयी है उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. **पञ्चतन्त्रम्** – सरल संस्कृत भाषा में नीति की शिक्षा देने वाले कथा–ग्रन्थों में पञ्चतन्त्रम् का अत्यधिक महत्त्व है। इसमें विष्णुशर्मा ने एक राजा के तीन मूर्ख पुत्रों को छह मास में राजनीति और व्यवहार में कुशल बनाने के लिए कथाएँ कही हैं। इसका विभाजन पाँच तन्त्रों (खण्डों) में है–मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक। प्रत्येक तन्त्र में एक मुख्य कथा तथा उसके भीतर अवान्तर कथाएँ हैं। कथाओं को परस्पर ऐसा गूँथा गया है कि एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत हो जाता है। इसका स्वरूप गद्य–पद्यात्मक है। सामान्यतः कथा गद्य में तथा नैतिक शिक्षा पद्य में है।
2. **मनुस्मृतिः** – मनु द्वारा प्रतिपादित प्राचीन भारतीय समाज की आचार–संहिता का यह पद्यात्मक ग्रन्थ 12 अध्यायों का है। इसमें प्राचीन भारतीय समाज के लिए पालन करने योग्य नियमों का व्यापक संकलन है।
3. **विदुरनीतिः** – महाभारत के उद्योग पर्व में कुरुवंशी विद्वान् विदुर द्वारा दिये गये उपदेशों का संग्रह है जो भगवद्गीता के समान स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में है। इसमें नौ अध्याय हैं।
4. **चाणक्यनीतिः** – इसके रचयिता चाणक्य हैं। इसमें 17 अध्याय तथा 340 श्लोक हैं। लोकव्यवहार की शिक्षा सरल श्लोकों में देने के कारण नीतिग्रन्थों में यह बहुत लोकप्रिय है।
5. **सुभाषितरत्नभाण्डागारम्** – अनेक कवियों द्वारा रचित तथा अज्ञातकर्तृक श्लोकों का संग्रह है। इसमें प्रायः दस हजार छोटे–बड़े श्लोक हैं।
6. **मृच्छकटिकम्** – शूद्रक द्वारा रचित 10 अंकों का सामाजिक नाटक (प्रकरण) है, जिसमें दरिद्र किन्तु कभी संपन्न स्थिति में रहे वाणिज्यजीवी ब्राह्मण चारुदत्त तथा गणिका वसन्तसेना की प्रेमकथा है। इसमें प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था तथा निरंकुश राजतन्त्र का चित्रण है।
7. **नीतिशतकम्** – भर्तृहरि रचित एक सौ से अधिक सरल तथा नीति–विषयक पद्यों का ग्रन्थ है। इसमें मूर्खों की असाध्यता, विद्वानों के महत्त्व, धन की शक्ति, मनस्विता इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।
8. **भामिनीविलासः** – संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट कवि तथा काव्यशास्त्री आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित स्फुट (मुक्तक) पद्यों का संग्रह है, जिसमें चार भाग (विलास) हैं–

अन्योक्ति, शृङ्गार, करुण तथा शान्त। प्रथम विलास में कवि ने सिंह, हंस, कमल, मधुकर, चन्दन, मेघ, समुद्र आदि को लक्षित कर सुन्दर तथा भावपूर्ण अन्योक्तियाँ दी हैं।

9. **हितोपदेशः** – नारायण पण्डित द्वारा रचित नीतिकथाओं की लोकप्रिय पुस्तक है। इसकी 43 कथाओं में 25 **पञ्चतन्त्र** से ही ली गई हैं। इसके चार भाग हैं–मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि। कथा कहने की इसकी पद्धति पञ्चतन्त्र के समान है।

10. **रामायणम्** – आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत भाषा का आदिकाव्य है, जिसमें मर्यादा पुरुष राम के जीवन का काव्यात्मक वर्णन है। यह सात काण्डों में विभक्त है– बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध तथा उत्तर। प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है।

11. **वेतालपञ्चविंशतिः** – अत्यन्त प्राचीन 25 लोककथाओं का संग्रह है। संस्कृत साहित्य में इन कथाओं का प्राचीनतम रूप क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेव के कथासरित्सागर में मिलता है। ये दोनों कथाग्रन्थ पैशाची प्राकृत में गुणाढ्य द्वारा रचित 'बड्डकहा' (बृहत्कथा) के संस्कृत पद्य रूपान्तर हैं। **'वेतालपञ्चविंशतिः'** के नाम से संस्कृत में दो स्वतंत्र संस्करण हैं। प्रथम संस्करण शिवदास कृत है जो मुख्यतः गद्यात्मक है, इसमें कहीं-कहीं पद्य भी हैं। दूसरा संस्करण जम्भलदत्त कृत है जो पूर्णतः गद्य रूप में है। इसकी लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि इसकी कथाओं का भारत की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

www.dreamtopper.in

12. **छान्दोग्योपनिषद्**– सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बद्ध उपनिषद् है जो आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें अनेक रोचक कथाओं द्वारा दार्शनिक विषयों को स्पष्ट किया गया है।

13. **पञ्चरात्रम्**– इसके रचयिता भास हैं जिसका कथानक महाभारत से लिया गया है।

14. **कथासरित्सागर** – यह गुणाढ्यकृत प्राकृत कथाग्रन्थ (बृहत्कथा) का विशालतम संस्कृत संस्करण है। इसमें 18 लम्बक तथा 24000 श्लोक हैं। इसकी रचना कश्मीरी कवि सोमदेव ने राजा अनन्तदेव की पत्नी सूर्यमती के मनोरंजन के लिए की थी।

जिन आधुनिक रचनाओं को इस पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है उनके लेखकों में श्री **जानकीवल्लभ शास्त्री** संस्कृत तथा हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। **काकली** तथा **बन्दीमन्दिरम्** इनकी आरम्भिक संस्कृत रचनाएँ हैं। **श्री वाई. महालिङ्ग शास्त्री** ने काव्य, नाटक, कथा आदि सभी प्रकार की रचनाएँ की हैं। **'संस्कृत प्रौढपाठावलिः'** इनकी विविध कथाकृतियों का संकलन है।

पद्मशास्त्री ने संस्कृत की कई विधाओं को समृद्ध किया। **विश्वकथाशतकम्** में संसार के विभिन्न देशों की एक सौ श्रेष्ठ कहानियों का संक्षिप्त संस्कृत रूपान्तर प्राप्त होता है।

आशा है कि यह भूमिका छात्रों को संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के विकास के साथ-साथ संकलित पाठों के मूलग्रंथों तथा ग्रन्थकारों से परिचय प्रदान करेगी।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता (Creativity) का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

www.dreamtopper.in

ध्यातव्य बिन्दवः -

1. **भारतीवसन्तगीतिः** – शिक्षक छात्रों के उच्चारण व सस्वरवाचन/गायन पर जोर दें।
2. **स्वर्णकाकः** – कथा को पहले रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। प्रत्ययों का सामान्यज्ञान पाठान्त में अवश्य दें।
3. **गोदोहनम्** – एकाङ्की पढ़ाते समय आधुनिक परिवेश से जोड़ें। समय पर किए जाने वाले कार्यों के लाभ तथा इसके विपरीत हानि होना निश्चित है। संवादों के माध्यम से अभिनय द्वारा इस पाठ को पढ़ाया जाए।
4. **सूक्तिमौक्तिकम्** – श्लोकों का सस्वरवाचन अवश्य सिखाएँ।
5. **भ्रान्तो बालः** – रोचक ढंग से कथा प्रस्तुत करें। तत्पुरुष समास व विभक्ति प्रयोग बताएँ।
6. **लौहतुला** – रोचक ढंग से कथा शिक्षण करें व कथा का संदेश (न्याय की सूक्ष्म दृष्टि न्यायाधिकारी में होनी चाहिए) छात्रों को दें।
7. **सिकतासेतुः** – कथा की रोचकता बरकरार रखते हुए कथा का संदेश प्रभावी ढंग से दें।
8. **जटायोः शौर्यम्** – वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त परिचय छात्रों को दें और श्लोकों का सस्वर वाचन छात्रों से करवाएँ। स्त्रीप्रत्यय का परिचय दें।

9. **पर्यावरणम्** – प्राचीन भारत में पर्यावरण की सुरक्षा व वर्तमान में प्रदूषण के संकट से परिचित कराते हुए छात्रों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।

10. **वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्** – प्राचीन वाङ्मय (वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, पुराण आदि) का संक्षिप्त परिचय दें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि इस संकलन को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।

संपादक

www.dreamtopper.in

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
	पुरोवाक्	*iii*
	पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	*v*
	भूमिका	*ix*
	मङ्गलम्	1–1
1.	भारतीवसन्तगीतिः	2–6
2.	स्वर्णकाकः	7–16
3.	गोदोहनम्	17–25
4.	सूक्तिमौक्तिकम्	26–31
5.	भ्रान्तो बालः	32–38
6.	लौहतुला	39–45
7.	सिकतासेतुः	46–53
8.	जटायोः शौर्यम्	54–60
9.	पर्यावरणम्	61–67
10.	वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्	68–73

www.dreamtopper.in

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

www.dreamtopper.in